लौटे हुए मुसाफिर — एक विवेचन

डॉ.मा.ना.गायकवाड
कै.व्यंकटराव देशमुख महाविद्यालय
बाभळगाव ता.जि.लातुर

प्रस्तावना :

'लौटे हुए मुसाफिर' कमलेश्वर का देश—विभाजन के परिणामों पर लिखा गया प्रसिध्द उपन्यास है। भारत—पाकिस्तान के बंटवारे की भीषणता को सांप्रदायिक दंगो को यथार्थ रुप में चित्रित करते हुए तत्कालीन राजनीतिक परिवेश पर प्रकाश डाला है। विभाजन के पूर्व, विभाजन के समय, विभाजन के बाद इन परिस्थितियों में समय के साथ व्यक्ति बदलता है, उसकी दृष्टि, उसके विचार, उसकी मैत्री, उसकी दुश्मनी सब कुछ बदल जाते है। समय की इस मार से कोई बच नही पाता। इसी वातावरण का चित्रण लेखक ने सहजता तथा यथार्थ से किया है। भारत—पाकिस्तान विभाजन के पूर्व हिंदू—मुस्लिम तनाव कैसे पैदा हुआ? और इस तनाव के बाद वस्ती कैसी उजडी ? इसका चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में मिलता है। बस्ति हो या कस्बा, वास्तविक रुप से देश विभाजन का कोई लेना—देना नही था। सभी धर्म जाति के लोक एक विचार रहते थै। लेकिन देश विभाजन की आग ने व्यक्ति—व्यक्ति के बीच में, दो धर्मो के बीच में, दो जातियों के बीच में संदेह पैदा कर दिया। एक दूसरे को पानी में देखने लगते है। स्वयं कमलेश्वर प्रगतिवादी विचारधारा से जुडे होने के कारण उनकी रचनाओं में यथार्थ देखा जा सकता है।

'लौटे हुए मुसाफिर' उपन्यास का केंद्रबिंदु एक चिकवा नामक बस्ति है। इस बस्ति में सभी जाति धर्म को लोग बडे प्यार से रहते थे। एकता वहां का मुख्य आकर्षण था। हिंदुओं की रामलिला में मुस्लिम और मुस्लिम के ताजिया में हिंदू अंत्यत अंतर्मन से शरिक होते थे। किसी के मन में व्देष या ईर्षा भाव नही था। जब देश में स्वाधिनता का आंदोलन जोर पकडने लगा तो इस आंदोलन का प्रभाव इस बस्ति पर भी हुआ। इस आंदोलन में हिंदू और मुस्लिमों ने भाई—भाई समझकर कंधा से कंधा मिलाकर हिस्सा लिया था। इतना ही बस्ति के कुछ क्रांतिकारोने अंग्रेज आधिकारियों का खून भी किया था। बस्ति के राधेश्याम को कालेपानी की सजा हुई थी तो युनुस को फाँसी पर लटकाया गया था। पूरी बस्ति अंग्रेजो के खिलाफ लडने के लिए तयार थी। चोरी—चोरी, चुपके—चुपके मिटिंग लिया करते थे। **"सन बयांलिस के आंदोलन में चिकवो के जवान लडकों ने बडा उधम मचाया था। उन्हे नही मालूम था कि, देश कैसे आजाद होगा, पर इतना उन्हे मालुम था कि, कुछ करना चाहिए, और वे जो कुछ कर सकते थे, वह उन्होनें किया था।"** ०१ अर्थात चिकवों की बस्ति में राजनीतिक चेतना थी। स्वाधिनता की सभी गतिविधियाँ बस्ति में

चलायी जाती थी। सभी भारत माता के सपूत थे। हर एक बस्ति में कुछ ऐसे लोग होते है। जिन्होंने अपनी रोजमरा की जिंदगी के अलावा कोई लेना—देना नही होता। ऐसे भी लोग चिकवों की बस्ति में थे। जुम्मनसाई और नसीबन इसका उदाहरण है। जुम्मनसाई के कोठरी के सामने धूम मची रहती थी। इक्के और तांगेवाल, स्टेशन के कुली तथा छोटे दुकानदार वहां श्याम को एकत्रित होते थे और गप्पे लडाते थे। कई बार सुख—दुख की चर्चाएँ होती थी। १९४५ तक बस्ति में किसी भी प्रकार का दंगा नही था। किसीने एक—दूसरे को गाली तक नही दी थी। **“लेकिन भीतर—भीतर एक भूचाल आया था।वह भयानक भूचाल, जिसने बस्ति की चूलहील गई थी। भीतर—भीतर सब कुछ बिगड गया था। दिल की इमारते ढह गयी थी। अपनेपन का जज्बा मर गया था। नफरत की आग ने इस बस्ति को निगल लिया था। और भरी—भरी चिकवों की बस्ति सबसे पहले उजड गई थी। पता नही यह आग कहाँ छिपी हुई थी।”** ०२ स्वातंत्रता की क्रांति में कुछ धंर्मान्ध लोग घुस गये। उन धर्मान्धोने इस स्वाधिनता आंदोलन का रुप बदलकर विभाजन का जहर घोल दिया। विभाजन के जहर ने सांप्रदायिकता का उग्र रुप धारण कर एक दूसरे पर टूट पडे। जिसंमें सामान्य व्यक्ति मारा गया। यह वह व्यक्ति था जिसे धार्मिकता का कोई लेना देना नही था। जो रोजमर्रा के जिंदगी से लडनेवाले लोग थे। लेकिन ऐसी सांप्रदायिकता की आंधी आदमी को देखती नही है वह केवल राख चाहती है। धर्मान्ध लोग इसमें सफल हो गये।

उपन्यास का पात्र ‘सत्तार’ एक महत्वपूर्ण पात्र है। उसे गाना गाने का शौक था। अपना शौक पूरा करने के लिए वह सर्कस में भर्ति हो जाता हैं। वह दूसरे कस्बे से आया था। शहर में उसकी जुम्मनसाई से भेट हो जाती है, और जुम्मनसाई उसकी रहने की व्यवस्था मस्जिद के बाहर वाली कोठरी में करता है। जो अपनी ही जिंदगी में मस्त रहता है। बस्तिवालों के कानों में चलते—चलते तेल डालने काम सत्तार करता है। वह सहजता से कहता है कि, **“लगता ह ैअब पाकिस्तान बन जावेगा .... शायद एक बेहत्तर जिंदगी मिले मुसलमानों को, यहाँ तो बडी गरीबी है, न करने को काम है, न रहने को जगह।”** ०३ सत्तार का यह कथन मुसलमानों के प्रति चिड निर्माण करता है। यहां प्रश्न विभाजन का नही रहता वह हिंदू—मुस्लिमों का बन जाता है। मुसलमानों को लगता है कि, सही मायने में यहाँ रोटी नही, घर नही है, पाकिस्तान बन गया तो यह सब मिलनेवाला है। एक विदारक विचार चिकवा बस्तिवालो के मन में आना स्वाभाविक है। बस्ति में अज्ञानी ही लोग थे। देश में क्या चल रहा है। इससे कोई मतलब नही था। सत्तार का विचार कुछ ऐसा ही था। लोगों को जानबझकर भडकाना उसका उद्देश्य नही था वह आतंकि तथा सांप्रदायिक हमला और स्वाधिनता का हमला इसमें फर्क नही समझते।

धीरे—धीरे आंदोलन तेज होता जाता है। गांधी, नेहरु, सुभाषचंद्र बोस के विचारो के लोगो को अंग्रेज सरकार गिरफ्तार कर लेती है। तब बस्ति में खलबली मच जाती है। कुछ उग्रवादी आकर डाकखाना जलाकर भाग जाते है। बस्तिवालो को लगता है कि, यह सब गोरे लोगों का काम है। उन्हें पहले मारना चाहिए इसीलिए गरम खून का सत्तार

छुरा लेकर नदी किनारे जाकर बैठना है। नसीबन उसको इस इरादे के बारे में पुछती है तो कहता है कि, **"...... इरादा तो कुद नही है। पर इतना जरुर लगता है कि, अगर एक भी अंग्रेज मार लिया तो....... ठण्डक आयेगी। यह तो मैं नही जानता लेकिन इतना मुझे पता है कि, अंग्रेज हमारे दुश्मन है...... और उन्हें मारना हमारा फर्ज है। पूरा मुल्क आज मुखातिकत में उठ खडा हुआ है।"** ०४ यह आजादी की लडाई हिंदू—मुस्लिम मिलकर लडते थे। उनका यह मकसद था कि, देश को अंग्रेजो के चंगुल से निकालना। लेकिन इस स्वातंत्रता की लडाई में एक दूसरी लडाई सुलग रही थी वह अलग पाकिस्तान बनाया जाय और वह केवल मुसलमानों का देश हो। यह दुतर्फा लडाई मुस्लिम और हिंदू के लिए अलग—अलग मायने रखती थी। जो धर्म के प्रमी थे उनको लगता था अपने धर्म का देश अलग होना चाहिए। स्वतत्रंता के नाम पर धर्मो को बांटने का प्रयास हिंदू और मुसलमान की ओर से हो रहा था। हिंदू महासभा तथा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के लोग अपने—अपने तरिके से हिंदूओं को जागृत करने का काम कर रहे थे। मुसलमान भी पीछे नही थे। गावँ—कस्बा में जाकर पाकिस्तान और मुस्लिम के संदर्भ में जागृति कर रहे थे। गावँ की मस्जिद इसी के विचार विमर्श करने के अड्डे बन गये। मस्जिद का उपयोग नमाज अदा करने के लिए कम और बाहर से आए हुए मुसलमान कार्यकर्ताओं की ठहरने के विश्राम गृह बन गये। जुम्मनसाई, सत्तार और मकसद यह तीनों चकवे की बस्ति में मुसलमानों को अपने धर्म के प्रति जागृत कर रहे थे। और हिंदूओं प्रति मुसलमानो के मन में जहर घोलते थे। मस्जिद के अहाते में जुम्मनसाई एक मिटिंग बुलाता है जिसमें मदरसे के मौलवी, अन्य मुसलमान और मकसूद तथा यासीन शामिल हो जाते है, मकसूद, यासिन का परिचय कराता है। कहता है कि, **"ये यासीन साहब है, अलीगढ के सियासी कारकुन है। मुस्लिम लीग में काम करते है और मुसलमानों की भलाई की खातिर ही जगह—जगह घूमते है। जिन्ना साहब इन्हे बडी इज्जत के साथ देखते है।"** ०५ इस कथन से स्पष्ट होता है कि, सत्तार जुम्मनसाई के दिमाग में क्या चल रहा है। यह साधारण बात नही है। मुसलमानों के भावनाओं को भडकाने काम था। अत: हिंदू और मुसलमानों में आपसी सम्बंध खराब होकर दुराभाव बढता जाए, यही यासिन का मुख्य लक्ष्य था। केवल धार्मिक भावनाओं को भडकाने का काम करते है। अत: पाकिस्तान की माँग तथा निर्माण की प्रक्रिया में मस्लिमों का सक्रिय सहयोग शायद इसीलिए था कि, वे बहुसंख्याक हिंदुओं के नेतृत्व में नही रहना चाहते थे। अल्मसंख्याक होने के नाते हिंदूस्तान में रहने की उनकी तैयारी नही थी। इसका और भी एक कारण था कि, मुस्लिमों के मन में डर की मात्रा इसीलिए बढती गयी कि, वे स्वतंत्र भारत में अल्पसंख्यांक होने से बहुसंख्यांक हिंदुओं के अधिन रहेंगे। इसके साथही मुसलमान बादशाह कई साल सत्ताधिस थे। इसीलिए बहुसंख्य हिंदू मुस्लिमों से बदला लेंगे। इस बात का फायदा मुस्लिम लीग चाहती है और पाकिस्तान की माँग लोगों के सामने रखती है। सारे भारत में इसी प्रकार का वातावरण बन जाता है। सभी मुसलमान कार्यकर्ता अपने—अपने प्रचार में लगे हुए थे। मस्जिद में मिटिंग बुलाई जाती

थी। **“तो बात जंग की नही है। इस बक्त हमें उन भीतरी बातों को समझना है जो जिन्ना साहब कर रहे है। आप हिंदुओं की चालों को नही समझते। हिंदू कौम हमारे साथ नही हो सकती। हमने हिंदूस्तान पर सदियों हुकुमत की। आजादी के बाद उसी का बदला वे मुसलमान कौम से लेंगे,यह बिल्कुल तय है।”**०६ इस कथन से पाठक समझ सकते है कि, मुसलमानों की मानसिकता कैसी बना दी गई थी। वास्तविक रुप में जिस प्रकार सोच रहे थे, उस प्रकार का वातावरण भारत में नही था। लेकिन कार्यकर्ता धर्म को भावनाओं के साथ जोडकर सियासती खेल–खेलने का षडयंत्र बना रहे थे। उपन्यास का पात्र ‘यासिन’ अधिक जहरिला है। वह मुसलमान भाईयों के कान तेडे करने का काम करते रहता है। हिंदुओं प्रति मुसलमानों को भडकाता है। तथा मुस्लिम लीग के बारे में बताता है कि, मुस्लिम लीग सारे मुसलमानो के लिए अलगसा पाकिस्तान बनाने का काम कर रही है। जिन्ना के प्रति लोगों के मन में विश्वास पैदा करना रहता है। लोगो को बताता है कि, काँग्रेस मुसलमानों के लिए काम नही करती है। काँग्रेस की बातों पर विश्वास मत करना। उनकी नजर में केवल जिन्ना ही मुस्लिमों के हित के बारे में सोचते है ऐसी धारणा बन जाती है। यासिन कहता है कि, **“भाई, बात यह है कि, गलत फहमी बहुतो को है। काँग्रेस अगर हमारी जमात भी होती तो हमें लीग बनाने की जरूरत क्यों पडती ? अगर हिंदुओं को मंदिरो में इबादत की जा सकती है तो मस्जिदों की तामीर क्यों होती। हिंदू–हिंदू है और मुसलमान–मुसलमान।”** ०७ अत: यासिन तथा उनके साथियों का केवल लीग पर विश्वास है। किसी भी काँग्रेस कार्यकर्ता पर विश्वास नही है। लेकिन सभी मुसलमान एक समान नही है। इफ्तिकार जैसे कुछ लोग भी है, जो इस विचारों का विरोध भी करते है। केवल देश नया बनाने से देश की हालात नही सुधार सकते। किसी नये देश में कोई सोना देनेवाली सरकार नही होती है। किसी भी देश में मुफ्त की रोटी नही मिलती तो कोई भी देश नया हो या पुराना काम तो काम करना ही पडता पडेगा। वह सत्तार को कहता है कि, **“सत्तार भाई, जो चाहे जो कुछ, पर मुझे लगता है कि, इन बातों से गलत फँहमियाँ फैल रही है। अब मुसलमान को कहाँ जाना है ? यही मुल्क है और लगता मुझे यह भी है कि, अगर पाकिस्तान बना भी तो अपने किसी काम नही आयेगा। पाकिस्तान में भी हमें तो इक्का ही हाँकना पडेगा।”** ०८ अर्थात जिन मुसलमानों लगता था कि, पाकिस्तान में जाने से उनका भविष्य बदलनेवाला है वह गलत था। जो अपना पशीना बहता है वही पेटभर खा सकता है। यही फारम्युला वहाँ पर भी काम करनेवाला है, तो पाकिस्तान बनने या ना बनने से क्या फर्क पडनेवाला था। केवल धर्मांध होकर अफवाएँ फैलाना यह काम यासिन का और मकसूद का था। चिकवे की बस्ति में हिंदू और मुसलमानों के मन में अंदर से डर बैठा हुआ था। अपनी दहशत जमाने के लिए दोनो भी धर्म अपने अपने प्रचार कर रहे थे। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ वाले बस्ति में कभी–कभी परेड करते है। तो लीग वाले भी अपनी जमात लेकर बस्ति से गुजरते है। चिकवो की बस्ति में स्थानिक रुप से राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना की जाती है।

संघ के लोग मुसलमानों के विरोध में प्रचार करते हुए घुमते नजर आ रहे थे। इसी तरह बस्ति का वातावरण रहा। एक—दूसरे के मन मे व्देष कलह बनता गया। बस्ति के रिश्ते बदलते गये। व्यक्ति के मन की दूरिया बढती गई। सत्तार का मित्र जो हिंदू है। वह भी संघ में शामिल होता है। सत्तार अपने मित्र रतन को मिलने के लिए जाता है, तो उसके बाजूवाला सत्तार को देखकर कहता है कि, **“औरंगजेब ने जो अत्याचार किए है हिंदू धर्म को जिस तरह भ्रष्ट किया है उसी का बदला तो लेना है। हमारी परम्परा है, राणा प्रताप की शिवाजी की जिन्होनें मलिच्छों से कभी समझौता नही किया.....।”** ०९ वह सत्तार की ओर घृणा की नजर से देखता है। सत्तार की इच्छा होती है कि, रतन से बात करे। रतन उसे अनदेखा करता है। फिर भी सत्तार बीडि का बहाना करता है। रतन बीडि लेने से इन्कार करता है। अत: रतन सत्तार की पुरानी दोस्ती तोड देता है। संघने रतन के मन में ठूस—ठूस कर मुसलमानों के प्रति जहर भर देता है। रतन अब पूरा मुसलमान विरोधी बनता है। सत्तार के साथ अपनी पुरानी दोस्ती भूल जाता है। अत: बस्ति में जातियता का जहर फैल जाता है। पूरे बस्ति में नफरत का एक भयकंर सैलाब आता है। बस्ति में हर—आदमी अपने धर्म का निशान लगाकर घुमने लगता है। बस्ति की ऊँची इमारतों पर कही मुस्लिम लीग के झण्डे तो कही हिंदू महासभा के झण्डे नजर आते है। बस्तियों में आर्य समाजियों ने जगह—जगह पर ओम लिख दिया है। लखनऊ अलिगढ तथा नागपूर—पूणा से आए हुए पर्चे भी सारे बस्ति में दिखाई देते है। तो दूसरी ओर जुम्मनसाई और मुस्लिम—लीग कार्यकर्ता मुसलमानों को समझाते है कि, इस्लाम खतरे में है। बस्ति में जो लोग मात्र इन्सान थे। वह आज हिंदू और मुसलमान बनकर बस्ति में घुमते है। सदियों से हिंदू और मुसलमान भाईचारे से जीवन निभाते आए थे, किन्तु राजनीतिक नेताओं के बहकावे में आकर, सदियों से चले आ रहे रिश्तों और सम्बधों को वे भूल जाते है।

उपन्यास में आजाद हिंद फौज का भी उल्लेख मिलता है। गली के बच्चे ‘आजाद हिंद फौज’ का भी उल्लेख मिलता है। गली के बच्चे ‘तुम मुझे खुन दो मैं तुम्हे आजादी दूँगा’ के नारे गुणगुणाते नजर आते है। तो बस्ति के अनेक मुस्लिम इस नारे के विरोध में काम करते है। चिकवों की बस्ति के हिंदू और मुस्लिम पहले अपनापन से और भाईचारे से जिंदगी गुजारते थे, लेकिन मुस्लिम लीग और स्वयंसेवक संघ वालो ने अपने राजनीतिक स्वार्थ के कारण दिन—ब—दिन दो मजहबो में दरार डालने का काम किया। इस मजहबी विचारों का परिणाम बस्ति के गरीब रोजगार करने वाले पर भी पडा। एक दूसरे से डर रहे थे। बस्ति के कई लोगों के सामने रोजी—रोटी का एक सवाल था। इफ्तिकार इक्का चलाता है। पहले उनके इक्के में हिंदू और मुसलमान दोनों बैठते थे। लेकिन अब केवल मुस्लिम ही बैठते है, हिंदू बैठते नही है। इफ्तिकार जितनी, मुस्लिम सँवारिया करता है और रास्ता देखकर घर वापस आता है। जल्दी वापस आने का कारण सत्तार पुछता है, तो इफ्तिकार बताता है कि, **“..... थी तो, पर कुछ समझ में नही आता सत्तार। मैं मुसलमान हुँ, शायद इसीलिए लोग मेरे इक्के पर बैठते कतराते**

है.... .स्टेशन का रास्ता सूनसान है न! इसलिए उन्हे डर लगता है। उसे पुछो, यही पैदा हुआ...... यही रहा—बसा अब लोग म नही मन मुझ पर शक करते है। समझ में नही आता, यह हो क्या रहा है।” १० हिंदू मुस्लिम सांप्रदायिकता से डर और शक बढता गया है। सांप्रदायिकता के कारण ही इक्केवाले इफ्तिकार पर भुके रहने की नौबत आती है। देश विभाजन में मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान बनाने में अधिक श्रम किया। काँग्रेस की सरकार बनाने की नीतियों में शामिल नही होते। वो काँग्रेस को साथ नही देना चाहते थे। जीन्ना काँग्रेस को हिंदूओं की पार्टि मानते थे। उनका कहना था कि, एक भूमि में हिंदू और मुस्लिम एक साथ नही रह सकते। जीन्ना इसी बात को लेकर सभी मुसलमानों को १६ अगस्त को काला दिन मनाने के लिए कहते है। यह काला दिन मतलब भारत में बन रही सरकार का विरोध है। सन १९४७ को भारत आजाद हुआ। लेकिन वह दो टुकडों में विभाजित हुआ। चिकवों की बस्ती में यासिन ने ही अधिक धूम धाम से जस्न मनाया।

सारांश :

तात्पर्य यह है कि, 'लौटे हुए मुसाफिर' उपन्यास में निम्नवर्गीय चिकवों की बस्ति के जिंदगी को देश विभाजन के साथ जोडकर परिणाम दिखाने का प्रयास किया है। भारत विभाजन के पूर्व हिंदू—मुस्लिम तनाव कैसे पैदा हुआ ? और तनाव के बाद बस्ति कैसी उजडी तथा फिर स्वाधिनता के लम्बे अर्से के बाद बस्ति कैसी आबाद हुई आदि समस्याओं का वास्तविक चित्रण किया है। स्वतंत्रता पूर्व मुसलमानों के मन में पाकिस्तान बनने की जो चाह थी वह सभी खत्म हो गयी। उन्हे जो लगता था कि, पाकिस्तान में सभी अमीर होंगे, वहाँ पेटभर खाना मिलेगा वहाँ काम की कोई कमी नही होगी अत: जो अनौरस जो इच्छा थी वह सभी धूल में मिल गई। उन्होंने सोचा अलग था, लेकिन हुआ अलग। असलियत को जानने के पश्चात उन सब को बहुत बडा आघात पहुचाँ। सत्तार की आत्महत्या, बच्चन का लापता होना, इफ्ताकार का हाथरस में ताँगा चलना, गनी मिस्त्री का फिरोजाबाद में जाकर मजदूरी करना ही गरीब मुसलमानों को बटवारे की नियायत के रुप में मिला है। गरीब मुसलमान अपने सुबे को भी पारन कर पाये लेकिन जो राजनीतिक नेता और अमीर थे, वही पाकिस्तान जा सके अत: जो गरीब मुसलमान थे वह अपना गाँव घर छोडकर इधर—उधर भाग गये। अधिकतर भटकते रह गये है। चिकवों की बस्ति उजउ गयी। नसीबन एक मात्र थी की बस्ति को छोडकर कही नही गयी। १४ साल लौट जाते है। इन १४ सालों में अकेलापण महसूस किया। १४ वर्षो के पश्चात कुछ बस्तिवाले लौटते है तो नसीबन चौंक जाती है, और कौतुहल से उन्हें उनके गिरे हुए घर दिखाती है। ये सारे बच्चे अब जवान होकर अपना बचपन याद करते है और खंडहर बने अपने मलबो को हसरत भरी निगाहों से देखते है। इस उपन्यास के बारे में डॉ.सुरेश सिन्हा का विचार महत्वपूर्ण है, **“लौटे हुए मुसाफिर' में आस्था, आत्मविश्वास, कर्तव्य परायणता, देशानुराग एवं दायित्व निर्वाह का तो उन्होने महान संदेश दिया है, वह आज के परिप्रेक्ष्य में अत्यंत महत्वपूर्ण है और इसलिए इस पीढि के प्रकाशित उपन्यास में कमलेश्वर का यह**

उपन्यास विशेष उल्लेखनिय हो जाता है।” ११ अत: इस विभाजन के परिणाम स्वरूप उस समय जो होना था वह हो गया। लेकिन उसके परिणाम आनेवाली पीढि को भुगतना पडा इसका अत्यंत मार्मिक चित्रण किया है। कमलेश्वर ने यह स्पष्ट कर दिया है कि, समय के साथ व्यक्ति बदलता है। उसकी दृष्टि, उसके विचार, उसकी मैत्री उसकी दुश्मनी सब कुछ बदल जाते है। समय की इस मार से कोई नही बच सकता। इसी वातावरण का चित्रण लेखक ने सहजता तथा यथार्थ से किया है।

संदर्भ :

०१) कमलेश्वर : लौटे हुए मुसाफिर, ज्ञानभारती ३१ नागिनदास बिंल्डींग मुंबई । संस्करण १९७१ पृष्ठ क्र. ०४।
०२) कमलेश्वर : लौटे हुए मुसाफिर, ज्ञानभारती ३१ नागिनदास बिंल्डींग मुंबई । संस्करण १९७१ पृष्ठ क्र. ०४।
०३) कमलेश्वर : लौटे हुए मुसाफिर, ज्ञानभारती ३१ नागिनदास बिंल्डींग मुंबई । संस्करण १९७१ पृष्ठ क्र. ०९।
०४) कमलेश्वर : लौटे हुए मुसाफिर, ज्ञानभारती ३१ नागिनदास बिंल्डींग मुंबई । संस्करण १९७१ पृष्ठ क्र. २५।
०५) कमलेश्वर : लौटे हुए मुसाफिर, ज्ञानभारती ३१ नागिनदास बिंल्डींग मुंबई । संस्करण १९७१ पृष्ठ क्र. २६।
०६) कमलेश्वर : लौटे हुए मुसाफिर, ज्ञानभारती ३१ नागिनदास बिंल्डींग मुंबई । संस्करण १९७१ पृष्ठ क्र. २७।
०७) कमलेश्वर : लौटे हुए मुसाफिर, ज्ञानभारती ३१ नागिनदास बिंल्डींग मुंबई । संस्करण १९७१ पृष्ठ क्र. २७।
०८) कमलेश्वर : लौटे हुए मुसाफिर, ज्ञानभारती ३१ नागिनदास बिंल्डींग मुंबई । संस्करण १९७१ पृष्ठ क्र. ३२।
०९) कमलेश्वर : लौटे हुए मुसाफिर, ज्ञानभारती ३१ नागिनदास बिंल्डींग मुंबई । संस्करण १९७१ पृष्ठ क्र. ३६।
१०) कमलेश्वर : लौटे हुए मुसाफिर, ज्ञानभारती ३१ नागिनदास बिंल्डींग मुंबई । संस्करण १९७१ पृष्ठ क्र. ४८।
११) डॉ.सुरेश सिन्हा : हिंदी लघु उपन्यास, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण १९७२ पृष्ठ क्र. १०७

ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com